स्कूल की तैयारी

वृन्दा दत्ता

शिक्षा के अधिकार के सन्दर्भ में प्राथमिक स्कूलों में बच्चों का नामांकन नाटकीय ढंग से 96% तक बढ़ गया है (ए.एस.ई. आर. 2013)। पर अभी भी उनका स्कूलों में टिके रहना, एक कक्षा से आगे न बढ़ना, स्कूल छोड़ देना और सीखने के कमजोर स्तर जैसी समस्याएँ भारत में शिक्षा के क्षेत्र की सबसे पड़ी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इसलिए स्कूल में बच्चे के दाखिले, सामंजस्य और सफलता को समझना बहुत जरूरी है। इसी सन्दर्भ में घर से निकलकर स्कूल में उसका रमना, अवस्था परिवर्तन की एक महत्त्वपूर्ण घटना हो जाती है। स्कूल से जुड़ा यह अवस्था परिवर्तन अकसर घर से या प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रम से निकलकर स्कूल में बच्चे के दाखिला लेने के पहले और बाद के कालखण्ड को कहा जाता है (यूनिसेफ, 2012)। जैसा कि शैक्षिक साहित्य में माना गया है, इस अवस्था परिवर्तन के सुगमता पूर्वक होने के लिए, बच्चों को स्कूलों के लिए तथा स्कूलों को बच्चों के लिए तैयार होना जरूरी है (यूनिसेफ, 2012)। अतः स्कूल का यह अवस्था परिवर्तन और स्कूल में प्रवेश की तैयारी एक–दूसरे से जुड़ी हुई अवधारणाएँ हैं।

शुरुआती शैक्षिक साहित्य में, स्कूल की तैयारी के अन्तर्गत सिर्फ संज्ञानात्मक और अकादमिक कौशलों पर जोर दिया गया था। पर अब स्कूल की तैयारी को कहीं अधिक समग्र अवधारणा के रूप में देखा जाता है। यह एकदम से नहीं होती, बल्कि स्कूल की तैयारी को बच्चे के स्कूल में प्रवेश करने के समय तक के जीवन के परिणाम के रूप में देखा जा सकता है (जेनस, ह्यूज डुकू, 2010)। इसके साथ ही स्कूल के लिए तैयार बच्चे के स्कूल में ठीक से काम कर सकने के लिए, ऐसे तैयार स्कूल भी होना चाहिए जो बच्चे के सीखने में और उसके विकास में सहयोग करें। इन कारकों को ध्यान में रखते हुए, यूनिसेफ ने स्कूल की तैयारी का ऐसा प्रतिरूप तैयार किया जहाँ तैयार परिवार, तैयार स्कूल और तैयार बच्चे तीन ऐसे जरूरी आयाम हैं जिनके आपसी सहयोग और क्रियाकलाप से स्कूल की तैयारी हो पाती है। इसके अलावा इसमें अवस्था परिवर्तन के ऐसे कालखण्डों की बात कही गई है जिनमें स्कूल, परिवार और समुदाय एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तैयार माता–पिता

बाल्यावस्था के प्रारम्भिक वर्षों में बच्चों की देखरेख और उनको प्रोत्साहन मुख्यतः माता–पिता और देखभाल करने वालों के द्वारा ही प्रदान किया जाता है। बच्चों की विभिन्न जरूरतों और उनके विकास को लेकर माता–पिता की भागीदारी और उनकी समझ से उन्हें बच्चों को सही पोषण, प्रेरणा, स्वास्थ्य सेवा और उनकी परवाह करने वाला घरेलू परिवेश देने में मदद मिलती है। इसके बाद ये माता–पिता बच्चों की देखभाल करने वाले ऐसे कार्यक्रमों की तलाश करेंगे जिनके द्वारा बच्चों की देखरेख के उनके प्रयासों में उन्हें सहयोग मिल सके। अलग–अलग सामाजिक–आर्थिक स्तरों वाले परिवार अपने बच्चों के विकास के अलग–अलग अवसर निर्मित करेंगे। लेकिन इस दिशा में माता–पिता की जागरूकता और भागीदारी से, परिवार के सारे संसाधनों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कर पाने में और प्रारम्भिक बाल्यावस्था के दौरान किए जाने वाले प्रयासों का भी उपयोग करने में मदद मिलेगी। ऐसे माता–पिता स्कूलों में बच्चे के सामंजस्य बैठाने में और उसकी प्रगति में गहरी रुचि भी प्रदर्शित कर सकेंगे। ऐसा होने के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनमें माता–पिता की सहभागिता, माता–पिता का सक्रिय रूप से शामिल होना, और माता–पिता की शिक्षा से, माता–पिता को अपने बच्चों की शिक्षा व उनके विकास में भागीदार बनने में मदद मिलती है।

स्कूल के लिए तैयार बच्चे

अब यह तथ्य भली–भाँति प्रमाणित हो चुका है कि जीवन के पहले पाँच वर्ष बच्चों को उनके विकास की सर्वोत्तम

सम्भावना तक पहुँचने में उनकी मदद करने का सबसे बड़ा अवसर होते हैं। इसलिए वैश्विक रूप से इस बात को स्वीकार किया गया है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था में किए जाने वाले प्रयास और कार्यक्रम बच्चे के विकास के लिए बेहद जरूरी घटक हो गए हैं। इसके बाद समग्रतावादी विकास के दृष्टिकोण से यह अनिवार्य हो जाता है कि बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण और विकास पर एक समान ध्यान दिया जाए क्योंकि इन सबकी सहक्रिया ही बच्चों को सर्वोत्कृष्ट विकास की ओर ले जाता है। बच्चों के विकास के लिए सहयोग देने में समग्रतावादी विकास का जोर न सिर्फ बच्चों को शारीरिक रूप से तैयार करने पर रहेगा बल्कि सामाजिक और भावनात्मक रूप से सक्षम बनाने पर भी रहेगा। बच्चे के पूर्व–स्कूल के वर्षों तक पहुँचने के साथ ही संज्ञानात्मक और भाषाई कौशलों के लिए विशेष रूप से दिए जाने वाले सहयोग बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने में बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। विकास की इस प्रक्रिया में बच्चा ऐसे आचरण और कौशल भी सीख रहा तथा प्रदर्शित कर रहा होता है जिनका उपयोग वह सीखने की और दूसरों के साथ होने वाले क्रियाकलापों में करता है। अतः, बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने में प्रारम्भिक बाल्यावस्था के दौरान किए जाने वाले प्रयासों और कार्यक्रमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पर ये तभी प्रभावी हो सकते हैं जब ये गुणवत्तापूर्ण ढंग से काम करें और सन्दर्भानुकूल हों।

बच्चों की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने और उम्र व संस्कृति के अनुरूप सीखने की गतिविधियाँ तथा सामग्री प्रदान करने के द्वारा यह सुनिश्चित हो सकेगा कि कार्यक्रम सभी बच्चों तक पहुँच रहा है। भारत में ये कार्यक्रम सरकार, स्वैच्छिक संगठनों (एन.जी.ओ.), निजी तौर पर व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा चलाए जाते हैं। चूँकि इनके लिए कोई नियामक तंत्र नहीं है, इसलिए ये सभी अच्छा कार्यक्रम देने की अपनी–अपनी समझ और क्षमताओं के मुताबिक अपने कार्यक्रम चलाते हैं। लेकिन इसके चलते गुणवत्ता में इतनी ज्यादा विविधता हो जाती है कि इन कार्यक्रमों से बच्चों को मिलने वाले लाभों में भी भारी अन्तर होता है। प्रभावी रूप से इसका मतलब हुआ कि बच्चों की "स्कूल की तैयारी" अलग–अलग स्तर की होती है, और स्कूलों को इस बात को ध्यान में रखना होगा और इसके अनुसार स्कूलों को बच्चों के लिए तैयार होना पड़ेगा।

तैयार स्कूल

तैयार स्कूलों का सबसे महत्त्वपूर्ण कारक सभी बच्चों के लिए सीखने का परिवेश प्रदान करना होता है। आज शिक्षा के अधिकार के अन्तर्गत यह हो सकता है कि प्राथमिक स्कूल अधिकांश बच्चों के लिए उपलब्ध हों और उनकी पहुँच में हों। पर प्राथमिक स्कूलों में सुगमता पूर्वक बच्चों के अवस्था परिवर्तन कर सकने में स्कूलों द्वारा मदद किए जाने के लिए यह जरूरी है कि ये स्कूल बच्चों की क्षमताओं के लिए उपयुक्त गति पर उनकी परिस्थिति विशेष के अनुकूल किताबें, पाठ्यसामग्री तथा पाठ्यचर्या का इस्तेमाल करते हुए स्थानीय जरूरतों को पहचानें और खुद को उनके अनुकूल ढालें। तैयार स्कूलों को तीन मुख्य चरणों पर ध्यान देने की जरूरत है पहला अवस्था परिवर्तन के पूर्व; दूसरा अवस्था परिवर्तन और तीसरा स्कूल में बच्चों का एकीकरण। अवस्था परिवर्तन के पूर्व चरण के लिए, प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों के साथ जुड़ाव बेहद जरूरी हो जाता है। स्कूलों को इस बात से अवगत होना चाहिए कि स्थानीय समुदाय के बच्चे किस प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों में जाते हैं, कैसे अनुभव और सीखने के स्तर के साथ वे स्कूलों में दाखिल हो रहे हैं, और इसलिए यह भी जानना होगा कि उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थिति क्या है। इससे शिक्षकों को यह जानने में मदद मिलती है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था के अनुभवों के सम्बन्ध में उनके बच्चों के समूह में कितनी विविधता है और 'तैयारी के विविध स्तरों' वाले इन बच्चों के साथ उन्हें किस तरह की शिक्षण विधि अपनानी चाहिए। अतः प्रारम्भिक बाल्यावस्था के क्षेत्र में काम करने वालों और स्कूल के शिक्षकों तथा माता–पिता के बीच संवाद आवश्यक हो जाता है ताकि सीखने की प्रक्रिया में भागीदारी करने को लेकर बच्चे के भीतर स्वयं के स्वीकार किए जाने का और उत्साह का भाव जग सके।

बच्चे के स्कूल में दाखिला लेने के एकदम बाद के संक्रमण काल में बच्चे को बहुत सारे सामंजस्य बिठाना पड़ते हैं और बहुत सी चुनौतियाँ झेलना पड़ती हैं। तैयार स्कूल इस परिस्थिति से अवगत होगा और सम्भवतः वहाँ बच्चों के लिए बहुत भिन्न गतिविधियों और पारस्परिक क्रियाकलापों की योजना बनाई जाएँगी जिनसे स्कूल के वातावरण, उसकी दिनचर्या और अपेक्षाओं को लेकर बच्चों में निश्चिन्तता का और स्कूल से परिचित होने का एहसास जगेगा। इसलिए तैयार स्कूल में ऐसे शिक्षक होंगे जो

अवस्था परिवर्तन के इस दौर के प्रति संवेदनशील होंगे और स्कूल की सहायता से एक संक्रमण कालीन पाठ्यचर्या बनाएँगे। यही शिक्षक फिर इस बात को परख सकेंगे कि बच्चों ने कब नई परिस्थितियों से सामंजस्य बैठा लिया है, और अब बच्चों के लिए जरूरी पाठ्यचर्या को, और उनसे की जाने वाली अपेक्षाओं को कैसे सामने रखा जाए। ऐसी प्रक्रियाओं से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और सीखने के नए कार्यों को लेकर उनकी शंकाएँ घट जाती हैं। इस प्रकार अवस्था परिवर्तन के पूर्व, अवस्था परिवर्तन और स्कूल में बच्चों का एकीकरण, ये सभी तैयार स्कूलों के महत्त्वपूर्ण भाग हैं।

निष्कर्ष

स्कूल प्रारम्भ करने की तैयारी तभी ठीक से होती है जब माता–पिता, बच्चे और स्कूल, सभी इस प्रक्रिया में भागीदारी करते हैं। हालाँकि इनमें से प्रत्येक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है, पर बच्चों को समर्थ बनाने वाला वातावरण तभी निर्मित हो सकता है जब स्कूल के कार्यक्रम और नीतियाँ इसमें सहायक हों। बच्चों को स्कूलों के लिए तैयार करने के लिए यह बेहद आवश्यक है कि उन्हें उच्च स्तरीय प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों का अनुभव हो। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि स्कूल की तैयारी होने के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों और प्राथमिक स्कूलों के बीच बेहतर संयोजनों का होना जरूरी है। और अन्त में, यदि हम स्कूल के लिए तैयारी को स्कूल के साथ सामंजस्य स्थापित करने की और स्कूली शिक्षा की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया मानते हैं, तो हमें शिक्षकों को ज्ञान और कौशलों के माध्यम से सशक्त बनाना चाहिए ताकि वे संवेदनशील रह सकें और बच्चों के हितों को सर्वोपरि रखें।

References

1. ASER 2013, 9th Annual Status of Education Report.
2. Janus,M; Hughes,D; Duku,E 2010 Patterns of School Readiness among selected subgroups of Canadian Children: Children with special needs and children with diverse language background. Oxford center for Child Studies, McMaster University, Canada
3. UNICEF 2012 School Readiness and Transition. A companion to child friendly school manual. NY; UNICEF

वृन्दा दत्ता टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुम्बई में सेण्टर फॉर ह्यूमन इकोलॉजी में प्राध्यापक हैं। वे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा और विकास संघ (ए.ई.सी.ई.डी.) की अध्यक्ष भी हैं, जो छोटे बच्चों के लिए काम कर रही संस्थाओं और व्यक्तियों का एक राष्ट्रीय नेटवर्क है। प्रो. दत्ता ने मानव विकास में पीएच.डी. की है और प्रारम्भिक बाल्यावस्था के क्षेत्र में उन्होंने खूब शोध किए हैं। उन्होंने प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों, शिक्षक प्रशिक्षण में गुणवत्ता तथा बच्चों के विकास पर प्रारम्भिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों के प्रभाव जैसे मुद्दों पर काम किया है। उनकी लिखी बहुत सी सामग्री प्रकाशित भी हुई है। 2005 में, प्रो. दत्ता को वर्ल्ड फोरम फाउण्डेशन द्वारा भारत से ग्लोबल लीडर (वैश्विक नेता) के रूप में चुना गया था। उन्हें 2007 में यू.एस.ए. की सीनियर फुलब्राइट रिसर्च फैलोशिप भी मिली थी। उनसे vrinda@tiss.edu या vdatta05@hotmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : भरत त्रिपाठी